International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-12-2020; Accepted: 08-01-2021; Published: 09-02-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 38-43

मधु कांकारिया के कथा साहित्य में पारिवारिक युगबोध

पंडित शिशुपाल गाँधी
शोधार्थी, मैसूर विश्वविद्यालय, मानस गंगोत्री, मैसूर, कर्नाटक, भारत

सारांश
आज के युग में यांत्रिक प्रोद्योगिकी का विकास इतना बढ़ गया है कि मनुष्य जाति की सृजनात्मक शक्ति तकनीकी बोझ से दब चुकी है, आज के युवा वर्ग को विज्ञान ने काव्य और साहित्य कला को निरूत्साहित्य किया है, धन का एकत्रीकरण, सुख – सुविधाओं की बहुतायत व्यापार बन चुका है। मधु कांकरिया 20वीं शताब्दी के मध्य से और इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दौर के समाज में फैली उँच – नीच की जड़ों पर भी निगाह डालती हैं और उनपर तीखा प्रहार करती है। लेखिका ऐसे लागों की मानसिकता पर तीखा वार करती है। ऐसे में इनकी कथा साहित्य के अंतर्गत 'मधु कांकरिया के कथा साहित्य में युगबोध' विषय लेकर शोध कार्य प्रगति पर जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विवेचना के साथ – साथ दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं शिल्पगत विशेषताओं से प्रभावित है। प्रस्तुत लेख 'मधु कांकारिया के कथा साहित्य में पारिवारिक युगबोध' के अंतर्गत निम्नलिखित बिंदूयों को देखा जा सकता है – संयुक्त परिवार की गृहणी जीवन, मध्यवर्गीय परिवार, आदर्श परिवार, शहरी परिवार, पति-पत्नी का सम्बन्ध, मातृत्व प्रेम या वात्सत्य तथा विधवा नारी का परिवार में युगबोध का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया गया है। मधु कांकरिया एक समर्थ कथाकार के तौर पर पिछले चालीस वर्षों से कथा जगत में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराते रहे हैं। इनकी रचना संसार का फलक जितना व्यापक है, वैसा हिन्दी में कम ही रचनाकारों में दिखता है।

मूलशब्द: मधु कांकारिया, पारिवारिक युगबोध

प्रस्तावना
आदिकाल से साहित्य और समाज का गहरा सम्बन्ध रहा है। साहित्य मनुष्य जीवन का न केवल दर्पन है बल्कि पथ – प्रदर्शक भी है। इसीलिए साहित्यकार ने कहा है – 'साहित्य समाज का दर्पण होता है', जैसे – जैसे विज्ञान की प्रगति होती गई वैसे – वैसे मनुष्य की जीवन कालिन परिस्थितियाँ संघर्ष पूर्ण होती चली गई। इस संघर्ष का यथार्थ अंकन समकालीन साहित्यों में हुआ है। आज के युग में यांत्रिक प्रोद्योगिकी का विकास इतना बढ़ गया है कि मनुष्य जाति की सृजनात्मक शक्ति तकनीकी बोझ से दब चुकी है। मधु कांकरिया इक्कीसवीं शताब्दी के समाज में फैली उँच – नीच की जड़ों पर भी निगाह डालती हैं और उनपर तीखा प्रहार करती है। लेखिका ऐसे लागों की मानसिकता पर तीखा वार करती है। ऐसे में मधु कांकारिया के कथा साहित्य में पारिवारिक युगबोध का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया गया है।

वर्तमान में अनेक विषमताओं एवं विसंगतियों के प्रभाव से पारिवारिक मूल्यों की टूटने की पीडा ,अस्तित्व का संकट , जीवन सम्बन्धों में अलगाव ,आदर्श परिवार एवं संयुक्त परिवार की दयनीन्य स्थिति ,मध्यवर्गीय परिवार का शोषण आदि का चित्रण दिखाई दे रहा है। युग ही साहित्य को उपजीव्य सामग्री देता है और साहित्यकार का दायित्व है उस युगबोध को ग्रहण कर एक शाश्वत रसात्मक दृष्टि प्रदान करना।

युगबोध से तात्पर्य
साहित्य अपनी विविध विधाओं से हमेशा से मानवीय संवेदनाओं से जुडा हुआ है। साहित्य में जो वर्णित है वही हमारा युगबोध है। हिन्दी साहित्य में युगबोध एक

कसौटी है । युगबोध का जन्म किसी निश्चित तिथि से करना कठीन है । 'युगबोध' शब्द में दो शब्दों का समनव्य है ,एक 'युग' जिसका सामान्य अर्थ समय या काल और दूसरा 'बोध' जिसका सामान्य अर्थ ज्ञान ,ज्ञात या जानकारी । मानक हिन्दी कोश में रामचन्द्र वर्मा लिखते है –"काल गणना के विचार से कल्प के चार उप – विभागों में से प्रत्येक सत्य ,त्रेता ,द्वापर और कलियुग वह समय विभाग जिसमें कुछ विशिष्ट प्रकार की घटनाओं ,प्रवृत्तियों आदि की बहुलता रही है जैसे– भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग , छायावाद युग, गाँधी युग ,आदि ।"1 मनुष्य समाजिक प्राणी होने के कारण सामाजिक वातावरण के सम्पर्क में बोध का विकास होता है । अतः 'युगबोध' में अधिकतर युग की मान्यताओं ,परिस्थितियों एवं संदर्भों का ज्ञान होना है । युगबोध का महत्व उसके परिवर्तन में है ।

साहित्य और युगबोध

साहित्य और युगबोध का सीधा सम्बन्ध कवि या साहित्यकार की उस रचनात्मक दृष्टि से है ,जिसके सहारे वह बदलते परिवेश में अपना उत्तरदायित्व संभालता है । प्रस्तुत समाज में मानव जीवन की समस्याओं और अस्तित्व की जटिलता को जानने के लिए सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्यों को देखना आवश्यक है । व्यक्ति समुदाय और परिवार से जुड़े होने पर भी व्यक्तिगत और सामाजिक मानव अस्तित्व का आर्दश ,राष्ट्रहित ,नैतिकता के विभिन्न सिद्धान्तों ,राजनीतिक आन्दोलनों से उत्पन्न स्थिति के कारण सामाजिक ,आर्थिक ,धार्मिक ,सांस्कृतिक आदि देखा जा सकता है । शान्तिप्रिय द्विवेदी अपनी पुस्तक युग और साहित्य में लिखते हैं – 'अतीत और वर्तमान की पृष्ठभूमि पर अपने साहित्य का निर्माण करते समय आने वाले युग के लिए नए मूल्यों को आयाम प्रस्तुत करता है तथा सुखद भविष्य की कल्पना करता है । प्रत्येक युग दूसरे युग पर अपनी छाप छोड़ता है । एक युग दूसरे युग को जो कुछ दे जाता है ,उसी आदान – प्रतिदान से नये –नये युग भविष्य की ओर चढ़ते है ।' साहित्य एक तरफ समाज से प्रभावित होता है और दूसरी तरफ समाज को भी प्रभावित करता है । युगबोध का समन्वय साहित्य और समाज से है । साहित्य से उभरने वाला चिंतन हमें उन्नत स्तर पर ले जाता है जहाँ मनुष्य का कल्याण एवं समृद्धि मात्र भौतिक न रहकर उससे बड़े परिप्रेक्ष्य की ओर अग्रसर रहता है ।

पारिवारिक शब्द का अर्थ एवं परिभाषा

हिन्दी शब्दकोश – डॉ. हरदेव बाहरी के अनुसार "'परिवार' शब्द का अर्थ एक घर में और एक के संरक्षण में रहनेवाले लोग, एक ही पूर्व पुरुष के वंशज । ~ आयोजन,~ नियोजन,आवश्यकता से अधिक संतान उत्पन्न न करने की योजना, फैमिली प्लानिंग ।"[2] हिन्दी का 'परिवार' शब्द अंग्रेजी के 'Family' शब्द का पर्याय है । 'पारिवारिक' शब्द का अर्थ – 'परिवार से संबंध रखने वाला, परिवार का (जैसे – पारिवारिक झंझटों से वह परेशान हो चुका था)।'[3] उपर्युक्त आधार पर परिवार की परिभाषा डॉ. मार्डक के अनुसार – "परिवार एक ऐसा समूह है, जिसके लक्षण सामान्य निवास, आर्थिक सहयोग और जनन है, इनमें दो लिंगों के बालिग शामिल हैं, जिसमें कम-से-कम दो व्यक्तियों में स्वीकृत यौन सम्बंध होता है, उनके अपने या गोद लिये हुए एक या अधिक बच्चे होते है ।"

मधु कांकारिया के कथा साहित्य में पारिवारिक युगबोध

मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण वह समाज में रहता है और समाज परिवार से बनता है, भारत का इतिहास परिवार से है । परिवार के बिना समाज नहीं बनता । आदि युगीन पारिवारिक जीवन का स्वरुप समन्वय का था, परिवार के सभी सदस्यगण मिलजुल कर जीवन निर्वाह करते थे सुख-दुःख को आपस में बाँट कर जीवन यापन करते थे । प्रस्तुत युग परिवर्तनशीलता का युग है । साल दर साल सभी क्षेत्रों में हमें परिवर्तन दिखाई देता है । मधु कांकरिया की कथा-साहित्य का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि पारिवारिक जीवन को लेकर लिखी गई इन कथ्यों में मुख्य रुप से दाम्पत्य जीवन का वह रुप चित्रित किया गया है जिसमें प्रस्तुत युग के समाज में अत्याधिक वैवाहिक जीवन टूटता या बिखरता हुआ दिखाई देता है । आदिकाल से जो परिवार के बड़े-बुजुर्ग होते थे वे हीं परिवार के मुखिया माने जाते थे परन्तु बदलते परिवेश में जो कमाकर लाता है वही परिवार का मुखिया कहलाने लगा है, जिसके कारण परिस्थितियाँ, आवश्यकताएँ तथा सामाजिक संबंधों का प्रभाव पारिवारिक जीवन पर पड़ा, नारी परंपराओं एवं प्रथाओं का समावेश में हुआ जिसके कारण संयुक्त परिवार टूटने लगे, परिणाम यह हुआ कि प्राचीन मूल्य व परंपराएँ प्रायः विलुप्त हो गई । परिवार में कुंठा, तलाक तथा विखराव

बढ़ने लगी, जिसका सीधा परिणाम पारिवारिक जीवन पर किस प्रकार परिवर्तन हुआ मधु कांकरिया के कथा साहित्य युगीन में दिखाई देता है।

पारिवारिक युगबोध से सम्बन्धीत इनकी कहानियों में आर आसवो ना, बड़ा पोस्टर, दरअसल मम्मी, कीडे, फैलाव आदि कहानियाँ है । इनकी कथा साहित्य में पारिवारिक युगबोध के अंतर्गत निम्नलिखित बिंदूयों को देखा जा सकता है –

- संयुक्त परिवार की गृहणी जीवन
- मध्यवर्गीय परिवार
- आदर्श परिवार
- शहरी परिवार
- पति-पत्नी का सम्बन्ध
- मातृत्व प्रेम या वात्सत्य
- विधवा नारी का परिवार

संयुक्त परिवार की गृहणी जीवन

मधु काकंरिया युगीन संयुक्त परिवार का चित्रण तशा नारी की गृहणी जीवन की दशा मार्मिक दिखाई पड़ता है। 'नार्मद' कहानी में गंगाबाई यानी सोनू की माँ की जुबानी – "तब औरतों की आँखों में जलती लकड़ी का धुआँ ही धुआँ था ... सोलह साल की मैं और ग्यारह आदमियों का खाना तो भोर से शुरू होती काम की घानी तो रात ग्यारह बजे तक बैल की तरह पिली रहती मैं उसमें ।..... उन्हीं दिनों जन्मा सोनू तो मैं भई उसको दूध पिलानेवाली गैया और मेरी सास भई हँसाने-खिलानेवाली मैया । मैं घिरी रहती तेल-चीनी-घी के डिब्बों से और सोनू घिरा रहता दादा-दादी, बुआ-काकाओं से ।..... दिनभर की खटनी, एकदम बेसुध और पगला देनेवाली नींद..... आधी रात को पति ने बुरी तरह झकझोर डाला.... आखिर दो कड़े थप्पड़..... देखा, सोनू आँखें ऊपर उलटा रहा है,..... घबराहट में बिना ओढ़नी डाले, सिर्फ घाघरा बलाउज में ही .... सास अपने कमरे में चाहे नंगी नाच पर बाहर कायदे से आ, ... ताँगे में जब तक सरकारी अस्पताल पहुँचे, सोनू के बाएँ पैर और हाथ में लकवा मार गया था ।"[4] जब अपनी दादी के पास पहुँची तो वे किसी घिसे हुए टेप रिकार्डर की तरह एकदम से चालू हो गई थी – "न यह करम जली उस रात घोड़े बेच सोती न सोनू को लकवा मारता ।" [5] इससे पता चलता है कि संयुक्त परिवार में गृहणी नारी की दशा कोलूह बैल, पति के लिए सिर्फ काम-वासना, वस्तु तथा सास के लिए नारी में संस्कार होनी चाहिए । यहाँ तक की उसकी दादी भी गलती उसी को समझती है ।

'कीडे' कहनी में प्रोफेसर वर्मा को मर्सी किलिंग का निर्णय लेना पड़ता है । जिस परिवार के लिए उसने बावन साल की मेहनत की, उसी परिवार को आज उनकी जरुरत नहीं का मार्मिक चित्रण किया गया है ।

मध्यवर्गीय परिवार

'महानगर की माँ' कहानी की कथावस्तु आधुनीकरण है, महानगरों में जीवन यापन करने वाले मध्यवर्गीय परिवार अनेको समस्याओं का सामना करना पड़ता है । आर्थिक अभाव के कारण छोटे से दो कमरो में पाँच सदस्यों के साथ रहनेवाली मीना चाहती है कि उसका पुत्र संदीप हायर सेकेंडरी की परिक्षा में अच्छे नम्बर से पास हो जिससे की वह अपना कैरियर बनाये लेकिन पढ़ाई का वो आर्थिक आभाव के कारण महौल नहीं दे पाती है । महानगरों में मध्यवर्गीय परिवार का जीवन यापन इस प्रकार देखा जा सकता है – "पाँच सदस्यों के उस परिवार में ले-देकर एक ही कमरा था और कमरे से सटा एक कोठरीनुमा खुला छोटा-सा बरामदा । वही कमरा इस परिवार का बेडरूम, ड्राइंगरूम, स्टडीरूम ..... सब कुछ ।"[6] मीना मिलनसार होने के कारण पड़ोसियों से अच्छे संबंध थे जिसके कारण उससे गपियाने के लिए कोई न कोई पहुँच हीं जाते थे घर पर जिसके कारण संदीप की पढ़ाई में बाधा पड़ती थी वो चाहती है कि थोड़ा-बहुत खर्च करके भाड़े का एक कमरा ले लिया जाए, जहाँ संदीप निर्विघ्न पढ़ सके । पूछने पर लोग उसके मुँह पर कह बैठते – "कलकत्ता जैसे महानगर में इतने रुपए में एक कमरा तो क्या, एक अच्छी खोला-बाड़ी तक न मिले... ।"[7] इस प्रकार अनुमान लगाया जा सकता है कि आर्थिक आभाव के कारण एक मध्यवर्गीय परिवार का जीवन यापन करना कितना कठिन है ?

आदर्श परिवार

परिवार समाज की प्रमुख इकाई है । समाज के निर्माण में परिवार की अहंम भूमिका होती है । मानव-प्रगति के इस युग में, जब व्यक्ति – स्वतन्त्रता की अराजकता की हद तक महत्व दिया जाता है और तानाशाही को 'सभ्य' समाज में अत्यन्त निन्दनीय माना जाता है । नारी परिवार का अहम हिस्सा है । भारतीय संस्कृति में आदर्श परिवार एक-दूसरे को आदर – सम्मान करते हैं । परन्तु प्रस्तुत युग

में यह अनुभूतियाँ जैसे धीरे – धीरे खत्म होती जा रही है । मधु कांकरिया के कथा साहित्य में आदर्श परिवार की कथावस्तु ना मात्र की दिखाई देती है पर लेखिका आदर्श परिवार के पक्ष में अपनी कहानियाँ में दर्शाने का प्रयास किया है । मधु कांकरिया युगीन परिवार में बेटे को ज्यादा महत्व दिया जाता है पर यह सोच आज सरकार की नीतियों के कारण समाज में बदलता जा रहा है । आज एक आदर्शपरिवार के लिए दोनों ही महत्वपूर्ण है । लेखिका आदर्श परिवार की परिकल्पना करते हुए कहती है कि पैतृक सम्पत्ति पर बेटियों का समान अधिकार होना चाहिए, जिस प्रकार एक परिवार अपने बेटे को अत्यधीक महत्व दे कर पालन – पोषण करता है, उसी प्रकार बेटीयों को भी करना चाहिए, लेश मात्र भी भेद-भाव नहीं करना चाहिए 'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास के गोविंद दा और उनकी पत्नि बऊदी एक आदर्श परिवार के रुप में दिखाई देते है, जहाँ वे नक्सलवादी आन्दोलन का इतिहास और सैकड़ों प्रतिभाशाली युवकों के उत्सर्ग ही कथावस्तु को अपने में शामिल किये हुए है ।

शहरी परिवार

मधु कांकरिया की अधिकतर कहानियाँ आधुनिक शहरी जीवन के मध्यवर्गीय परिवार को केंद्र में रख कर रचा गया है । शहरी परिवेश के संदर्भ में मन्नू भंडारी अपनी आत्मकथा 'एक कहनी यह भी' में इस प्रकार व्यक्त किया है – "आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी जिन्दगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित असहाय और असुरक्षित बना दिया है ।"[8] पारिवारिक जीवन को लेकर लिखी गई कहानियों में मुख्य रुप से दाम्पत्य जीवन का वह रुप चित्रित किया गया है, जिसमें वैवाहिक जीवन टूटता या बिखरता हुआ दिखाई देता है । इनकी कुछ कहानियों की कथावस्तु शहरी परिवार और नारी की समस्या के अलावा परिवार से हटकर अलग विषयों को लेकर लिखा है, जिसमें पीढ़ियों के अंतर को कारण भेदभाव, अपने ही परिवार के सदस्यों की स्वार्थ वृत्ति, आदि कहानियों में सूक्ष्म रुप से चित्रण किया है । 'फैसला फिर से' कहानी के माध्यम से शहरी परिवेश जीवन में महाश्वेता अनेक आलोचना और विरोधों का सामना करती है – "यूँ भी जीवन-वाटिका में लू के झोंको निरन्तर आते रहे थे और उसका व्यक्तित्व इन्हीं झोंकों में तप-तपकर फौलादी बनता गया थ ।"[9]

पति-पत्नी का सम्बन्ध

'नंदी ग्राम के चूहे' कहनी की कथावस्तु ट्रेड युनियन नेता मोहन दा को मिल मालिक ने खरीदने की कोशिश की परन्तु असफल रहा और हत्या करवा देता है । मोहन दा का मित्र शिबू इस घटना को सहन नही कर पाया और उसने अपने मालिक की हत्या कर देता है, जिसके कारण उसे जेल हो गई । उसकी पत्नी गर्व से थी, शिबू को उसने नहीं बतायी और गर्भपात करवा लेती है । पत्नी नहीं चाहती थी कि शिबू जेल में रह कर उसके लिए दुखी हो । प्रस्तुत कहानी में पति-पत्नी के बीच गहरी विश्वास एवं प्रेम एवं समर्पण भाव दिखाई देती है । शिबू के शब्दों में – "यदि लाख साल जी लूँ मैं .... तो भी उस देवी को भूल नहीं पाऊँगा । मैं उसका कृष्ण नहीं बन पाया पर वह मेरी मीरा बनी रही ।"[10] 'चिड़िया ऐसी जीती है' कहानी में भी पति – पत्नी के संबंधो का मार्मिक चित्रण हुआ है । पति के जीवन के लिए आकांक्षा सर्वस्व त्याग करने के लिए तैयार हो जाति है । जब नेपाल की यात्रा में दोनो होते हैं तो वहाँ पर रात में पति का अचानक तबीयत खराब होना अकेली औरत के लिए पराए देश में पति अखिलेश का जान बचाने में मदद करने वाले रामश्रेष्ठ के सामने स्वयं को प्रस्तुत करती है, आकांक्षा के शब्दों में – "मेरे पति को बचाकर आपने मुझ पर बहुत उपकार किया है । .... मैं जानती हूँ आप क्या चाहते है .... आपकी आँखों में लहराती वासना और कामना की भाषा भी मैं पढ़ रही थी । खैर आपने जिस कामना के वशीभूत मुझ पर यह उपकारकिया है, उसका ऋण चुकाने मैं आयी हूँ ।.... कम-से-कम यह संतोष .... रहेगा कि मेरी जिन्दगी, मेरी उड़ान वापस लौटायी उसकी इच्छापूर्ति का माध्यम मैं बन पायी .... तो बढो सह यात्री, मैं स्वयं को प्रस्तुत करती हूँ ।"11 इस आधार पर कहा जा सकता है कि आकांक्षा के लिए उसका पति ज़िन्दगी और उड़ान उसका जीवन है ।

'उड़ान' कहनी में संयुक्त परिवार का चित्रण के साथ पति-पत्नी के सम्बन्ध का चित्रण है, जहाँ समीर रिटायर्ड हुए दो वर्ष गुजर गये । अपने दो बेटे बहू एवं पत्नी के साथ संयुक्त परिवार में जीवन व्यतीत करते हैं, पर पत्नी हमेशा अपने बेटे का हीं गुणगान करती है, पति को वो दो कौड़ी

का समझती है । 'दाखिला' कहानी में पति-पत्नी के क्लेश के कारण एक बच्चे (विक्रम) की मनोदशा का वर्णन जिसके कारण उसका बचपन छिन जाता है ।

मातृत्व प्रेम एवं वात्सल्य

'दर असल मम्मी' कहनी की कथावस्तु सामाजिक परिवेश की है, जिसमें माता का हृदय अपने बेटे की बिमारी के कारण लाचारी को दर्शाया गया है । अपने बेटे का जीवन बचाने के लिए वह हर संभव प्रयास करती है और पति द्वारा हर अत्याचार को सहन करती है । 'महानगर की माँ' कहानी के माध्यम से मातृत्व प्रेम एवं वात्सल्य लेखिका ने मार्मिक चित्रण किया है । अपने पुत्र की पढ़ाई के लिए पूर्णतः समर्पित मीना, संदीप की नींद ही सोती एवं उसी की नींद जागती । सुबह संदीप के उठने के पूर्व ही वह चाय बनाकर तैयार रखती, रात उसके सोने के बाद स्वयं सोने जाती, जब कभी भी संदीप को यह चुप्पी असह्य हो जाती, "बस, कुछ दिन और' की स्नेहयुक्त थपकी से मीना बेटे संदीप को बहलाकर रखती....।'[12] मीना, अपने दूसरे बेटे समीर से भी बहुत प्यार करती है इसलिए तो जब संदीप के पढ़ाई को उसे थप्पड़ तक मारती है और क्रिकेट की खुमारी में डूबा समीर टी.वी. देखने दे देती है फिर बंद भी कर देती है, तो वो ट्रांजिस्टर से कमेंट्री सुनता है । पर एक दिन गुसे बाहर चला जाता है बहुत देर होने के बाद नहीं आता है तो माता का हृदय बहुत बिचलीत होती है । मातृत्व प्रेम एवं वात्सल्य का मार्मिक चित्रण –"एक काल्पनिक भय से सर्वांग सिहर उठा था उसका जाने कितने देवी-देवताओं को प्रसाद बोला, जाने कितनों की मन्नत माँगी, पर दूर-दूर तक समीर कहीं भी नज़र नहीं आ रहा था उसे । कमरे से ही सटे छोटे-से बरामदे की ग्रिल से लगातार गरदन बाहर निकालते रहने के कारण ऐंठन आ गई थी गरदन में भी ।"[13] माता का हृदय मीना चिंता और घबराहट की चरम सीमा में जाने कितने संकल्प कर डाले उसने –'हे बजरंगबली, बस एक बार समीर वापस आ जाए, सवा मन लड्डू से आरती उतारूँगी मंदीर में । मारना तो दूर कभी कड़ी बात तक नहीं निकालूँगी मुँह से.....'[14]

विधवा नारी का परिवार

'फैसला फिर से' कहानी के माध्यम से कथाकारा ने युगीन विधवा नारी के परिवार की समस्याओं को मार्मिक ढंग से चित्रण किया है । पैंसठ वर्षीय महाश्वेता अपने मकान मालिक हरिनारायण घोष के द्वारा मकान खाली कराने के लिए पड़ताडित करता है । जिस घर में वह तीस साल गुजार ने बाद जीवन की अंतिम पडाव में विधवा, संतानहीन बुढ़ी महाश्वेता कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाने पड़ते हैं । मुकदमे में अच्छा खासा पैसा बर्बाद हो जाता है अंततः वह वो केस हार जाती है । धोखा और चलाखी से प्रतिपक्ष का वकील स्वप्न चौधरी केस जीत जाता है, उसका खुशी मनाते देख वो इस प्रकार कहती है – 'लेकिन अपने जीवन के स्थूल सुखों में डूबे संतुष्ट सुअर-सा जीवन जीने वाले तुम मेरी बात को नहीं समझोगे, क्योंकि तुम्हारी खाल मोटी हो चुकी है और तुम्हें यह सब अपराध ही नहीं लगता ।'[15] इस प्रकार देखा जा सकता है कि एक विधवा नारी का परिवार न होने के कारण उसको कितनी हीं तकलीफ जीवन में सहनी पड़ती है ।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि सामाजिक विकास के साथ – साथ मधु कांकरिया युगीन पारिवारिक जीवन में भी परिवर्तन दिखाई देता है और आज भी दिखाई दे रहा है । बदलते वातावरण में नयी परंपराएँ तथा नयी प्रथाएँ पारिवारिक जीवन में ढलते चले जा रहे हैं । इनकी कहानियाँ व्यक्ति, परिवार और समाज में व्यापक रुप से व्याप्त आधुनिक संघर्ष और मनोवैज्ञानिक स्थितियों को बड़ी सूक्ष्मता से नियोजित किया गया है । लेखिका की अनेक कहानियाँ है, जिसमें असफल दाम्पत्य जीवन जीने वाली नारी का चित्रण किया गया है । 'दरअसल मम्मी', 'अंत में ईशु', 'दाखिला', आदि की कथावस्तु सामाजिक वातावरण की तत्कालिन पारिवारिक जीवन युगबोध कराती है ।

संदर्भ

1. रामचन्द्र वर्मा: मानक हिन्दी कोश: पृ:144
2. डॉ. हरदेव बाहरी: राजपाल हिन्दी शब्दकोश: पृ:484
3. डॉ. हरदेव बाहरी: राजपाल हिन्दी शब्दकोश: पृ:499
4. मधु कांकरिया : नामर्द : बीतते हुए (कहनी संग्रह): पृ:10-11

5. मधु कांकरिया: नामर्द: बीतते हुए (कहनी संग्रह) : पृ:11
6. मधु कांकरिया: महानगर की माँ: ...और अंत में ईशु (कहनी संग्रह): पृ:105
7. मधु कांकरिया: महानगर की माँ: ...और अंत में ईशु (कहनी संग्रह): पृ:106
8. सत्यनारायण (सं.): साहित्य गौरव: पृ: 33
9. मधु कांकरिया: फैसला फिर से: बीतते हुए (कहनी संग्रह): पृ:161
10. मधु कांकरिया: नंदी ग्राम के चूहे: युद्ध और बुद्ध (कहनी संग्रह): पृ:36
11. मधु कांकरिया: नंदी ग्राम के चूहे: युद्ध और बुद्ध (कहनी संग्रह): पृ:66
12. मधु कांकरिया: महानगर की माँ: ...और अंत में ईशु (कहनी संग्रह): पृ:107
13. मधु कांकरिया: महानगर की माँ: ...और अंत में ईशु (कहनी संग्रह): पृ:105
14. मधु कांकरिया: महानगर की माँ: ...और अंत में ईशु (कहनी संग्रह): पृ:109
15. मधु कांकरिया: फैसला फिर से: बीतते हुए (कहनी संग्रह): पृ:163